# फ्रांस की क्रांति 1789

डा0 राजीव कुमार
असिस्टेन्ट प्रोफेसर
लंगट सिंह महाविद्यालय, मुजफ्फरपुर
बी0 आर0 ए0 बिहार विश्वविद्यालय मुजफ्फरपुर

# यूरोप

Europe in 1789
boundary of the Holy Roman Empire
GREAT BRITAIN
(in union with Hanover)
FRANCE
SPAIN
PORTUGAL
RUSSIAN EMPIRE
POLAND
PRUSSIA
HABSBURG EMPIRE
OTTOMAN EMPIRE
SWEDEN
NORWAY
DENMARK
ATLANTIC OCEAN
North Sea
Mediterranean Sea
KINGDOM OF NAPLES AND SICILY
PAPAL STATES
TUSCANY
PIEDMONT
SWITZERLAND
SAXONY
BAVARIA
HANOVER
NETHERLANDS
Austrian Netherlands
Hungary
Galicia
VENETIAN REPUBLIC
Copyright © Swanston Map Archive Limited. All Rights Reserved

# फ्रांस

United Kingdom
English Channel
Belgium
Germany
Luxembourg
Switzerland
Italy
Spain
Andorra
Bay of Biscay
Mediterranean Sea
Hauts-de-France
Normandy
Brittany
Pays de la Loire
Île-de-France
Grand Est
Centre-Val de Loire
Bourgogne-Franche-Comté
Nouvelle-Aquitaine
Auvergne-Rhône-Alpes
Occitanie
Provence-Alpes-Côte d'Azur
Corsica
Paris
Lille
Rouen
Rennes
Nantes
Orléans
Dijon
Strasbourg
Lyon
Bordeaux
Toulouse
Marseille
Ajaccio
Dunkirk
Calais
Roubaix
Valenciennes
Amiens
Saint-Quentin
Beauvais
Cherbourg-Octeville
Le Havre
Caen
Évreux
Brest
Saint-Malo
Saint-Brieuc
Quimper
Lorient
Vannes
Saint-Nazaire
Laval
Le Mans
Angers
Cholet
La Roche-sur-Yon
Chartres
Tours
Blois
Bourges
Châteauroux
Reims
Châlons-en-Champagne
Charleville-Mézières
Thionville
Metz
Nancy
Troyes
Colmar
Mulhouse
Belfort
Besançon
Auxerre
Nevers
Chalon-sur-Saône
Mâcon
Poitiers
Niort
La Rochelle
Angoulême
Limoges
Périgueux
Brive-la-Gaillarde
Bergerac
Agen
Bayonne
Biarritz
Pau
Tarbes
Montauban
Albi
Carcassonne
Narbonne
Perpignan
Béziers
Sète
Montpellier
Nîmes
Alès
Clermont-Ferrand
Saint-Étienne
Annecy
Chambéry
Grenoble
Valence
Gap
Avignon
Arles
Aix-en-Provence
Martigues
Aubagne
Toulon
La Seyne-sur-Mer
Hyères
Grasse
Nice
Menton
Monaco
Antibes
Cannes
Fréjus
Saint-Tropez
Bastia
Copyright © Ontheworldmap.com

# फ्रांस

- लुई 14 वें के काल में फ्रांस किसी भी अन्य यूरोपीय देश की तुलना में आर्थिक रुप से ज्यादा समृद्ध था।

- फ्रांस की राजधानी पेरिस सभ्यता, संस्कृति, कला, साहित्य और फैशन का केन्द्र था।

- फ्रांस में भी अन्य यूरोपीय देशों की तरह राजशाही व्यवस्था थी। राजा का प्रशासन पर पूर्ण नियंत्रण था।

# फ्रांस की क्रांति का कारण

- सामाजिक
- राजनीतिक
- आर्थिक
- बौद्धिक (दार्शनिकों का योगदान)
- अन्य विदेशी घटनाओं का प्रभाव

# सामाजिक कारण

- फ्रास का समाज दो वर्गों में बँटा हुआ था:- सुविधाभोगी वर्ग एवम सुविधाविहिन वर्ग
- सुविधाभोगी वर्ग के अंतर्गत- पादरी और कुलीन सामंत आते थे।
- सुविधाविहिन वर्ग के अंतर्गत- जन साधारण एवम मध्यम वर्ग
- सुविधाभोगी वर्ग दो इस्टेट में विभक्त था। <u>प्रथम इस्टेट में पादरी</u> जबकि <u>दूसरे इस्टेट में कुलीन वर्ग</u> के लोग शामिल थे।

# सामाजिक कारण

## पादरी

- पादरी समाज में सर्वोच्च स्थान पर थे। चर्च की भूमि एवम संपत्ति का प्रबंध इनका मुख्य दायित्व था। फ्रांस की कुल भूमि का 20 प्रतिशत चर्च के कब्जे में था तथा यह संपूर्ण भूमि कर मुक्त थी। इतना ही नहीं चर्च को आमजन पर कर लगाने का अधिकार भी था। यह उत्पादन का 10% होता था जिसे टाइथ कर के नाम से जाना जाता था।

# सामाजिक कारण

## पादरी

- पादरियों की भी दो श्रेणी थी।

- पहली श्रेणी – उच्च पदाधिकारी यथा- आर्कबिशप, बिशप, कार्डिनल, एबट इत्यादि। ये सभी कुलीनों सामंतो के पुत्र हुआ करते थे। इनका वार्षिक वेतन 2500 पौण्ड था।

- दूसरी श्रेणी- साधारण पादरी। ये साधारण वर्ग से आते थे। इनका वार्षिक वेतन 20 पौण्ड था।

# सामाजिक कारण

## कुलीन वर्ग

- **कुलीन वर्ग-** Second Estate. **फ्रांस के कुल भूमि के 25% पर इनका नियंत्रण था। पादरियों की तरह इन्हें भी कोई कर नहीं देना पडता था। राज्य एवम सेना के उच्च पदों पर इन्हीं का नियंत्रण था।**

- **जमीन बेचने पर राशि का 20 फीसदी जागीरदार को देना पडता था। सडक, पुलों आदि पर कर भी वसूलने का उन्हे अधिकार था।**

- **पादरियों की तरह कुलीन भी दो वर्ग थे। धनीमानी और निर्धन ।**

# सामाजिक कारण

## कुलीन वर्ग

**दरबारी कुलीन-** वर्षाय में रहते थे।

**देहाती कुलीन-** प्रांतों की राजधानी में रहते थे।

**छोटे वाज-** दरिद्र होने की वजह से न तो कुलीनों की तरह शानोशौकत से रह सकते थे और न हीं वंश परंपरा की वजह से नवीन व्यवसाय शुरु कर सकते थे। उच्च कुलीनों की सिफारिश पर ही इन्हे नौकरी मिलती थी।

# सामाजिक कारण

## सर्वसाधारण वर्ग

- सर्वसाधारण वर्ग (सुविधाविहिन वर्ग) Third Estate
- कृषक, मजदूर, शिल्पकार, घरेलू कर्मचारी, मध्यम वर्ग के व्यापारी तथा बुद्धिजीवी सभी सुविधाविहिन वर्ग के अंग थे। इसकी आबादी करीब 95% थी जबकि कृषि योग्य भूमि के मात्र 55% पर इसका नियंत्रण था।

# सामाजिक कारण

- **<u>सर्वसाधारण वर्ग</u>**

- करों का संपूर्ण बोझ इसी के ऊपर था क्योंकि पादरी एवम कुलीन सभी प्रकार के करों से मुक्त थे।

- इस वर्ग को तीन प्रकार के कर देने पडते थे। राज्य को भूमि कर, चर्च को दसांश(टाईथ) तथा कुलीनों को सामंती कर

# सामाजिक कारण

- **<u>मध्यम वर्ग</u>**

- लेखक, कलाकार, शिक्षक, वकील, साहित्यकार, वैद्य, डॉक्टर, जज, अध्ययव्यवसायी, व्यापारी, साहूकार, कारखानों के मालिक, निम्न पदस्थ कर्मचारी इत्यादि इस वर्ग के अंतर्गत आते थे।

- इस वर्ग की आर्थिक दशा अच्छी थी तथा उच्च पदों को छोडकर सभी सरकारी पदों पर इनका कब्जा था।

# सामाजिक कारण

- **<u>मध्यम वर्ग</u>**

- **फ्रांस के धन, व्यापार और मस्तिष्क पर मध्यम वर्ग का कब्जा था। फिर भी राजनीतिक संस्थाओं पर इनका कोई प्रभाव नहीं था।**

- **मध्यम वर्ग सुयोग्य एवम समपन्न होने के बावजूद कुलीनों के जैसे सामाजिक सम्मान से वंचित था। वास्तव में मध्यम वर्ग कुलीनों एवम धनी पादरियों की सामाजिक श्रेष्ठता से ईर्ष्या करता था।**

- **<u>सामाजिक असमानता</u> मध्यम वर्ग के <u>असंतोष</u> का बडा कारण था।**

# राजनीतिक कारण

## निरंकुश राजतंत्र

- फ्रांस में भी राजशाही व्यवस्था थी। राजा के ऊपर किसी भी तरह का कोई अंकुश नहीं था। इस्टेट्स जनरल नामक एक प्रतिनिधि संस्था थी भी तो 1614 के बाद उसकी एक भी बैठक नहीं बुलाई गई थी।

- यही वजह है कि लुई 14वाँ कहा करता था कि <u>मैं हीं राज्य हूँ तथा मेरी ईच्छा हीं कानून है।</u>

# राजनीतिक कारण

- **प्रशासन पर राजा का अत्यधिक नियंत्रण था। वह कोई भी कानून बना सकता था, किसी भी प्रकार का कर लगा सकता था, युद्ध की घोषणा कर सकता था और महत्वपूर्ण अभियोगों पर निर्णय कर सकता था।**

- **प्रशासनिक पदों पर नियुक्ति में राजा का पूर्ण नियंत्रण था।**

# राजनीतिक कारण

- राजनीतिक स्वतंत्रता का घोर अभाव था। भाषण, लेखन, प्रकाशन पर प्रतिबंध था। व्यक्तिक स्वतंत्रता का भी अभाव था। कोई भी व्यक्ति बिना किसी अभियोग के ***लेटर डि कैशो*** के आधार पर गिरफ्तार किया जा सकता था।

- धार्मिक स्वतंत्रता का भी अभाव था। फ्रांस एक कैथोलिक बहु ल देश था। इस वजह से प्रोटेस्टेंट मतावलंबी को कई परेशानियों का सामना करना पडता था।

## राजनीतिक कारण

- फ्रांस में नागरिकों को कानून के समक्ष समता प्राप्त नहीं था। एक हीं गलती के लिए कुलीन और पादरी को अलग सजा मिलता था जबकि जनसाधारण को अलग (कठोर) सजा मिलता था।

- फ्रांस में हर प्रांत का अपना अलग कानून था। इस वजह से व्यापारियों को बडी कठिनाइयों का सामना करना पडता था।

- एक कस्बे में जो बात कानूनी और सही मानी जाती थी वही बात उस स्थान से 5 मील से भी कम दूरी पर स्थित दूसरे कस्बे में नियम के विरुद्ध और गैरकानूनी समझी जाती थी।----इतिहासकार हेज

# आर्थिक कारण

- राजमहल में भोग विलास पूर्ण जीवन पर सरकारी कोष से अत्यधिक व्यय हो रहा था। राज परिवार के अलावे पादरी और कुलीन सामंत वर्षाय के शीशमहल आराम का जीवन जीते थे। देश की स्थिति से बेखबर भोग विलास एवम ऐशो आराम में उनका जीवन व्यतीत होता था।

- विदेशों में युद्धों की वजह से भी सरकार के उपर 60 करोड डालर का ऋण हो गया था। इतना ही नहीं बजट में प्रति वर्ष 2.5 करोड डालर का नुकसान हो रहा था।

# आर्थिक कारण

- औद्योगिक क्रांति की वजह से कुटीर उद्योगों में काम करने वाले लोग बेगार हो गये थे।
- 1787 में फसल का उत्पादन अच्छा नहीं हुआ था। इसके वजह से न केवल अनाजों का कीमत बढ गया था बल्कि उद्योगों के लिए कच्चे माल की भी कमी हो गई थी।
- व्यापारियों एवम जन साधारण को कई तरह के करों का भुगतान करना पडता था जो उनके असंतोष का बडा कारण था।

# बौद्धिक कारण (दार्शनिकों का योगदान)

- फ्रांस की क्रांति में दार्शनिकों की भूमिका अत्यंत हीं महत्वपूर्ण है। चूँकि फ्रांस साहित्य का केन्द्र था। ऐसी परिस्थिति में वहाँ कई दार्शनिक हुए जिन्होंने अपनी रचना से फ्रांसीसी समाज को प्रभावित किया। उनमें मांटेस्क्यू, वाल्टेयर, रुसो, दिदरो इत्यादि प्रमुख थे।
- मांटेस्क्यू (1685-1755)- उसका जन्म फ्रांस के एक कुलीन परिवार में हुआ था। वह इंगलैण्ड की शासन व्यवस्था से बहुत प्रभावित था। उसने अपनी पुस्तक *द स्प्रिट ऑफ लॉ* में दैवी अधिकारों के सिद्धांतों का खंडन किया। फ्रांसीसी संस्थाओं की कटु आलोचना की। उसने वैधानिक शासन तथा व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर बल दिया।
- उसने प्रसिद्ध *शक्ति पार्थक्य का सिद्धांत* दिया। उसका मानना था कि कार्यपालिका, व्यवस्थापिका तथा न्यायपालिका पृथक होना चाहिए

# बौद्धिक कारण (दार्शनिकों का योगदान)

- <u>वाल्टेयर</u> (1674- 1755)- वाल्टेयर का जन्म मध्यम वर्गीय परिवार में हुआ था। वह प्रशा के निरंकुश राजतंत्र का समर्थक था।
- वह लोकतांत्रिक विचारों में विश्वास नहीं करता था। इस वजह से उसके विचार को प्रगतिशील नहीं माना जाता। बावजूद इसके वह फ्रांस में बहुत लोकप्रिय था क्योंकि उसकी लेखन शैली बहुत प्रभावशाली थी।
- चर्च के संगठन तथा सामाजिक कुप्रथाओं पर उसने करारा प्रहार किया। वह व्यक्तिगत स्वतंत्रता का समर्थक था। इसी वजह से शोषण एवम अत्याचार का घोर विरोधी था। फ्रांसीसी जनता को चर्च और राजा के आतंक से मुक्ति दिलाने में उसकी बडी भूमिका थी।

# बौद्धिक कारण (दार्शनिकों का योगदान)

- **रुसो (1712-1778) – उसका जन्म जेनेवा में हुआ था। रुसो देश में विद्यमान संस्थाओं से संतुष्ट नहीं था। वह सभी संस्थाओं को नष्ट एक नया समाज बनाने का इच्छुक था।**

- **उसने अपनी प्रसिद्ध *रचना कन्ट्रास्ट सोशल(1762)* में लिखा- मनुष्य स्वतंत्र पैदा होता है परंतु वह सर्वत्र जंजीरों से जकडा हुआ है। वह मनुष्य को सभी तरह के बंधनों से मुक्त करना चाहता था। यह कैसे संभव था, इसका उल्लेख उसके पुस्तक में है।**

# बौद्धिक कारण (दार्शनिकों का योगदान)

- रुसो का मानना था कि जनता सर्वोपरि है। अतः समस्त सत्ता उसी के हाथ में होनी चाहिए। सार्वभौम सत्ता जनता की इच्छा में निहित है। रुसो इसे जेनरल विल कहता था। उसका मानना था कि राज्य का कानून इसी की अभिव्यक्ति होनी चाहिए।

- उसका दो सिद्धांत था- 1. जनता की सार्वभौम सत्ता 2. समस्त नागरिकों की राजनीतिक समानता
- नेपोलियन कहा करता था कि रुसो नहीं होता तो फ्रांस में क्रांति नहीं होती।

# बौद्धिक कारण (दार्शनिकों का योगदान)

- दिदरो- वृहत ज्ञानकोष का संपादक था। इसमें उस समय के सभी योग्यतम व्यक्तियों की रचनाओं को शामिल किया गया था। इसके ज्यादातर लेख धर्म एवम राजनीति की खुलेआम आलोचना करते थे।

- इन लेखों में राजतंत्र की निरंकुशता और स्वेच्छाचारिता, चर्च की भ्रष्टता, सामंत पद्धति तथा सामाजिक असमानता, शासन की भ्रष्टता इत्यादि पर कई लेख लिखे गये। इन लेखों से जनता की सोच एक दिशा मिली।

- सरकार ने दिदरो को गिरफ्तार कर लिया तथा उसकी रचनाओं पर प्रतिबंध लगा दिया।

# बौद्धिक कारण (दार्शनिकों का योगदान)

- इन दार्शनिको के अतिरिक्त फ्रांस में एक अर्थशास्त्री हु आ क्वेसने। वह मुक्त व्यापार की नीति का समर्थक था। उसका मानना था कि जबतक व्यापार में सरकारी हस्तक्षेप नहीं रुकेगा तबतक आर्थिक विकास संभव नहीं है।

- व्यापारी वर्ग के लोग जो तरह तरह के करो से परेशान थे, ने क्वेसने के विचारों का समर्थन किया
- क्रांति के लिए कष्टों की तीव्रता हीं पर्याप्त नहीं है, उस तीव्रता का ज्ञान भी आवश्यक है।

# अन्य विदेशी घटनाओं का प्रभाव

- इंगलैण्ड की गौरवपूर्ण क्रांति (1688) का प्रभाव- इस घटना के बाद इंगलैण्ड में वैधानिक शासन की स्थापना हुई। वहाँ का संविधान, संसदीय शासन व्यवस्था तथा शासन संचालन के लिए उत्तरदायी मंत्रिमंडल फ्रांसीसीयों के लिए आदर्श था।

- इंगलैण्ड के नागरिकों की स्वतंत्रता, संसद की सर्वोच्चता तथा राजा के सीमित अधिकार इत्यादि से फ्रांस की जनता प्रभावित थी।

# अन्य विदेशी घटनाओं का प्रभाव

- अमेरिकी स्वतंत्रता संघर्ष का प्रभाव - इस संघर्ष में फ्रांस ने अमेरिका की सैन्य सहायता की थी। वहाँ से लौटे सैनिको ने अपने देशवासियों को बूर्बो राजवंश से देश को मुक्ति पाने के लिए प्रेरित किया।
- उनका मानना था कि फ्रांस में समानता लाने के लिए कुलीनों के विशेषाधिकार को समाप्त करना आवश्यक है।
- चूँकि वर्तमान सरकार इसे करने में समर्थ नहीं है। अतः शासन को समाप्त करने के लिए अमेरिका की भाँति हिंसक प्रतिरोध आवश्यक है।

# अन्य कारण

- फ्रांसीसी वित्त मंत्री तुर्जो, नेकर और केलोन के सुधार नीतियों की विफलता
- वित्तीय स्थिति सुधारने के लिए सरकारी खर्चे में कटौती तथा विशेषाधिकार वर्ग पर कर लगाने के प्रस्ताव की विफलता
- सैनिक असंतोष- सेना में वेतन विसंगति, खाने पीने संबंधी भेदभाव, पदोन्नति के समान अवसर का नहीं होना इत्यादि

# तात्कालिक कारण

- लुई 16वें की अयोग्यता तथा उसमें राजनीतिक दूरदर्शिता एवम अनुभव की कमी
- रानी मेरी एन्ट्वायनेट का शासन में अनावश्यक हस्तक्षेप
- रानी का फिजूलखर्ची स्वभाव
- फ्रांसीसी सरकार के वित्तीय दिवालियापन

# निष्कर्ष

- फ्रांस में क्रांति के लिए कोई एक कारण जिम्मेवार नहीं था। इसके लिए समाज में व्याप्त असंतोष था जिसके लिए गैर बराबरी जिम्मेदार था।
- मध्यम वर्ग जो धन एवम प्रतिभा के मामले में सम्पन्न था उसे भी वह सम्मान प्राप्त नहीं था जो पादरियों और कुलीनों को प्राप्त था.
- देश की आर्थिक स्थिति भी ठीक नहीं थी। इसका कारण विदेशी युद्ध एवम राजमहल का विलास पूर्ण जीवन था।
- कर का बोझ सिर्फ तृतीय इस्टेट के उपर था।
- इस सामाजिक असंतोष तथा राजशाही और चर्च के भ्रष्टाचार को दार्शनिको ने जनमानस के सम्मुख अपनी रचनाओं के माध्यम से खोलकर रख दिया.

# क्रांति के प्रति विचार

- क्रांति के अवसर पर फ्रांस असंतोष, अविश्वास, वर्ग संघर्ष, संदेह, घृणा, शिकायत, रोष, अनुदारता, स्वतंत्रता आदि का वह समन्वय प्रस्तुत करता था जो क्रांति के सर्वश्रेष्ठ कारण सामग्री प्रदान करता है।-----डी0एम0 केटेल्बी

- इस रक्तरंजीत क्रांति का समस्त उत्तरदायित्व 16वें लुई पर था। यदि वह दृढता और समझदारी से काम लेता तो क्रांति नहीं होती।---टॉकविले

- धन्यवाद

- घर पर रहें, सुरक्षित रहें।